2

भूगोल विषय की प्रकृति एवं व्यापकता

Nature of Geography and Scope

भूगोल-शिक्षण से पूर्व प्रायः तीन प्रश्न भूगोल शिक्षक के समक्ष आते हैं : (1) विषय का स्वरूप, (2) विषय शिक्षण के उद्देश्य, और (3) कैसे इन शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त किया जाय।[1] यहां हमारा केवल पहले प्रश्न से ही सम्बन्ध है।

सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि भूगोल क्या है तथा इसकी विषय-वस्तु क्या है? अपने प्रारंभिक काल से, जब से इस विषय का उद्भव हुआ है, आज तक अनेक विद्वानों ने इस पर अपने विचार प्रकट किये हैं। परन्तु जितने लोगों ने मत व्यक्त किए हैं, उतनी ही भूगोल की परिभाषाएँ हो गई हैं। कोई भी परिभाषा व्यक्ति के विषय के प्रति व्यक्तिगत दृष्टिकोण से प्रभावित हुआ करती है। यही बात पिंचमेल[2] (Pinchmel) ने निम्न शब्दों में कही है-

"Geography is the subject of widely differing definitions, concepts and aims profoundly influcenced by the personalities and temperament of individual geographer."

फिर भी इसके स्वरूप को समझने के लिए हमें संक्षेप में इसकी ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि में विचार करना होगा।

शाब्दिक अर्थ के आधार पर- शाब्दिक अर्थ "भूगोल" का अर्थ होता है "गोल पृथ्वी"। अर्थात् गोल पृथ्वी का वर्णन जो विषय करता है, वह भूगोल है।

परन्तु अंग्रेजी के शब्द "Geography" की यदि व्याख्या करें तो इसके दो भाग होंगे- ज्यो+ग्राफी (Geo+Graphy)। अर्थ होगा ज्यो=पृथ्वी, ग्राफी=वर्णन अर्थात् पृथ्वी का वर्णन। इसका अभिप्राय यह हुआ कि 'वह विषय जो पृथ्वी का वर्णन करे' भूगोल है।

भूगोल पृथ्वी के वर्णन के रूप में- वास्तव में, प्रारम्भ में भूगोल को पृथ्वी का वर्णन ही माना गया। पृथ्वी के वर्णन के अन्तर्गत विशेष रूप से खाड़ियाँ, अन्तरीप, समुद्र, पहाड़, नदियाँ, पठार, मैदान आदि ही आते थे। यही कारण है कि ग्रीक लोगों ने भूगोल की परिभाषा "भूगोल पृथ्वी का वर्णन है"(Geography is the description of the earth) स्वीकार किया। क्योंकि इस समय तक विशेष रूप से इसमें यात्राओं और भौगोलिक नामों का ही वर्णन होता था। अतः इसे "खाड़ियों और अन्तरीप का विषय ही कहा गया। वास्तव में यदि उस समय की परिस्थितियों पर विचार किया जाय तो यह ज्ञान भी महत्वपूर्ण था। परन्तु यह तो सिर्फ यात्राओं और पृथ्वी की धरातलीय आकृतियों के अतिरिक्त कुछ नहीं

---

1 *Gospill, G. H. : 'The Teaching of Geography', London, Macmillin Co., 1958, Quoted in The Nature and Spirit of Geography Teaching.*

2 *Pinchmel : Source Book of Geography Teaching, Longman UNESO.*

था। परन्तु फिर भी यही भूगोल का स्वरूप बहुत समय तक चलता रहा। भारत में कुछ समय पूर्व तक तथा इस सदी में भी भूगोल के अन्तर्गत पहाड़ों, नदियों, पठारों, मैदानों, समुद्रों, झीलों आदि का ही ज्ञान प्रारम्भिक कक्षाओं की विषय-वस्तु बना हुआ था। विद्यार्थी नीरस, असम्बद्ध तथ्यों को परीक्षा पास करने के लिए रटा करता था और परीक्षा के बाद भूल जाता था। निर्जीव तथ्यों के वर्णन के कारण इस विषय को 'मृत विषय' (dead subject) भी कह दिया जाता था।[1]

भूगोल पृथ्वी के वैज्ञानिक वितरण वर्णन के रूप में- परन्तु केवल कुछ नदियों, शहरों, पठारों, पर्वतों, खाड़ियों आदि के नाम के ज्ञान को भूगोल मानना युक्तिसंगत नहीं है। यह कार्य तो एटलस और गजट भी कर सकता था। फिर तो शिक्षक की भी क्या आवश्यकता है? वास्तव में ये बातें तो स्वाभाविक रूप से भूगोल की विषय-वस्तु में आ जाती हैं। उपर्युक्त प्रकार का भूगोल मनुष्य को कोई विशेष लाभ नहीं करेगा। भूगोल के अन्तर्गत मानचित्र, विभिन्न फसलों, खनिजों, उद्योगों का वर्णन आदि भी आता है। अतः दूसरी परिभाषा जो भूगोल की विकसित हुई, वह थी- "भूगोल वितरण का विज्ञान है" (Geography is the science of distribution)।

इस परिभाषा में विज्ञान (Science) शब्द का बड़ा ही महत्व है। प्रथम परिभाषा वैज्ञानिक परिभाषा नहीं थी। विषय-वस्तु का कोई क्रम नहीं था, वस्तुतः हम किसी भी विषय को उस समय तक नहीं समझ सकते जब तक कि वह ज्ञान क्रमबद्ध न हो। हालांकि यह परिभाषा प्रथम से श्रेष्ठ है परन्तु फिर भी पूर्ण उपयुक्त नहीं कही जा सकती है। उक्त दोनों परिभाषाओं में मानव के स्थान का कोई उल्लेख नहीं हुआ है। सच कहा जाय तो अभी तक प्राकृतिक भूगोल (Physical Geography) को ही वास्तविक भूगोल समझा जाता था।

मानव भूगोल - भूगोल मानव एवं प्राकृतिक वातावरण के पारस्परिक सम्बन्धों के रूप में- 1872 में फ्रांसिस गाल्टन (Francis Galton) ने एक विचार प्रस्तुत किया, जिसमें सर्वप्रथम भूगोल को एक व्यापक दृष्टिकोण में प्रस्तुत किया गया। गाल्टन ने भूगोल के अन्दर पृथ्वी के प्रत्येक भाग की मिट्टी, वनस्पति, नदियाँ, जलवायु, पशु और मनुष्य जो एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, को सम्मिलित किया। भूगोल की यह प्रमुख समस्या है कि वह उनके सह-सम्बन्धों की व्याख्या करे। उनके अनुसार-

"It is the configuration of every land, its soil, its vegetable covering its rivers, climate, its animals and human inhabitants react upon one another. It is the highest problem of geography to analyse their correlation."[2]

इस व्याख्या में भूगोल की अन्य शाखाओं का भी उल्लेख है। इस प्रकार फ्रांसिस गाल्टन को भूगोल के विकास की भविष्यवाणी के लिए एक भविष्यवक्ता भी कहा जा सकता है।

---

1 *"Conceptual understanding of Geography" 'The Geography Teacher' Vol. No. 1.*

2 *Francis Galton : 'President Report of the British Association', Section E, 1882; Quoted by Gospil in Teaching of Geography, p. 6.*

एक और अन्य भूगोलवेत्ता सर अल्फ्रेड मैकिण्डर (Sir Alfred Mackingder) का नाम भी उल्लेखनीय है। आपने सर्वप्रथम 'रायल ज्योग्राफीकल सोसाइटी' के समक्ष अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसमें भूगोल के स्वरूप का वर्णन किया गया। 1887 में उनके प्रसिद्ध लेख 'Scope and Method of Geography'[1] में भूगोल क्या है, इसकी पुनः व्याख्या की गई। मेकिण्डर का मत था कि 'भूगोल का मुख्य उद्देश्य मानव और वातावरण के परस्पर सामंजस्य का पता लगाना है।' (The main function of geography is to trace the interaction of man and his environment.')[2]

इस परिभाषा में दो शब्द महत्वपूर्ण हैं - (1) मानव, और (2) वातावरण। वातावरण के अन्तर्गत प्रदेश की स्थिति, धरातल की रचना, जलवायु, जलीय भागों का प्रभाव तथा मानव के अन्तर्गत मनुष्य के रहने के निवास-स्थल, उद्योग, व्यापार के साधन आदि मानव क्रियाएं आती हैं। इस प्रकार भूगोल की परिभाषा में सर्वप्रथम मानव और वातावरण के सम्बन्ध का उल्लेख किया गया।

भूगोल में नियतिवाद

कार्ल रिटर (Karl Ritter) ने मानव प्रकृति के बीच सम्बन्ध को बहुत महत्व दिया और सच कहा जाय तो मानवीय भूगोल अथवा मानव भूगोल (Human Geography) की आधारशिला रखने का श्रेय रिटर (Ritter) को ही है। कार्ल रिटर पर विशेष रूप से हम्बोल्ट[3] (Humbolt) का काफी प्रभाव पड़ा। उसी के प्रभावस्वरूप भूगोल में क्या व क्यों- का समावेश हुआ। अभिप्राय यह है कि प्रत्येक घटना के होने के कुछ कारण हुआ करते हैं। एक भूगोलवेत्ता को पृथ्वी सम्बन्धी घटनाओं और प्रभावों से परिचित होना आवश्यक है। इस प्रकार भूगोल में कार्य और कारण (Cause and effect) का भी समावेश हुआ।

कार्ल रिटर का विश्वास था कि प्रकृति के नियम अपरिवर्तनशील हैं और निश्चित हैं। ये नियम मनुष्य को कार्य करने की सुविधा देते हैं। यह मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह प्रकृति द्वारा प्रदत्त सुविधाओं को जाने और उपयोग करे। इस प्रकार उसने भूगोल की एक नई विचारधारा 'नियतिवाद' (Determinism) का बीजारोपण किया।

19वीं सदी के मध्य दो और महत्वपूर्ण व्यक्ति सर चार्ल्स लायल (Sir Charles Lyall) तथा चार्ल्स डारविन (Charles Darwin) हुए। इन दोनों की पुस्तकों ने क्रमशः प्रिंसीपिल्स ऑफ ज्योग्राफी (Priniciples of Geography) तथा ओरीजन ऑफ स्पेसीज (Origin of Species) ने भूगोल विषय में एक नया मोड़ दिया। फिर भी इन दोनों ने प्रकृति के प्रभाव को ही अधिक माना। डार्विन ने मनुष्य को एक जीव (Biological organsim) स्वीकार किया। उसके अनुसार प्रत्येक जीव को, जीवन बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ता है (Struggle for existence) तथा वही जीवित रह सकता है जो वातावरण में रहने के लिए उपयुक्त है (Survival of the fittest), अतः मनुष्य के लिए श्रेयस्कर है कि वह प्रकृति के कानूनों को समझे।

---

1 *Mackinder : Paper published in the proceedings of Royal Geographical Society, Vol. 9, 1887; Quoted by Gospil in Teaching of Geography, p.7.*

2 *Mackinder : Ibid.*

3 *Ritter, described by B. Hubbard : An Introduction to Advanced Geography, London, Longmans Green, 1958.*

थोड़े ही दिनों बाद इसी विचारधारा के समर्थक फ्रेडरिक रेत्जेल (Friedrich Ratzel) तथा कुमारी सेम्पल (Miss Sample) हुई। इन दोनों की निम्न पुस्तकें प्रकाशित हुई रेत्जेल की 'एन्थ्रोपोज्योग्राफी' (Anthropogeography, 1882), तथा कुमारी सेम्पल कृत 'दी इन्फ्लुएन्स आफ ज्योग्राफिक एइन्वाइरनमेंट' (The Influence of Geographic Environment)। रेत्जेल ने मानव को अन्य जीवों से श्रेष्ठ स्वीकार किया और कहा कि मानव ही ऐसा प्राणी है जो प्राकृतिक वातावरण का मुकाबला कर सकता है। रेत्जेल ने भूगोल में स्थिति एवं क्षेत्र के महत्व को भी प्रतिपादित किया।

भूगोल में सम्भववाद

19वीं सदी के अन्त और 20वीं सदी के प्रारम्भ में दो और प्रमुख विचारधाराओं, प्रथम विचारधारा के प्रवर्त्तक समाजशास्त्री लाप्ले तथा दूसरी के प्रवर्त्तक उनके शिष्य ई. डिमोलिन (E. Demolins) का समावेश हुआ। इन दोनों ने प्राकृतिक वातावरण और मनुष्य के सम्बन्ध का अध्ययन किया। इस तरह भूगोल की एक अन्य परिभाषा और सामने आई- "भूगोल वह विज्ञान है जो स्थानीय दशाओं और स्थिति का प्रभाव मनुष्य पर बताता है।" ("Geography is the science which treats of the relation between earth and man.") Or ("Geography is the science which treats of the influence on man on local conditions and space relations").

इन दोनों परिभाषाओं में हम देखते हैं कि एक नवीन तत्व का समावेश हुआ है। यह है 'मनुष्य'। अब भूगोल पढ़ने का लक्ष्य हमारे सामने आता है कि आखिर यह विषय क्यों पढ़ा जाय? अब परिभाषाओं में भूगोल विषय में सिर्फ पृथ्वी का वर्णन ही नहीं बना रह गया, वरन् वर्णन का आधार भी दिखाई देता है। इन परिभाषाओं में एक ऐसे तत्व 'मानव' का उल्लेख हुआ है जो प्रगति का संकेत है तथा प्रकृति के वातावरण से प्रभावित है। परन्तु ये दोनों भूगोल की परिभाषाएँ भी पूर्ण नहीं कही जा सकतीं।

यहाँ तक मानव प्रकृति के दास के रूप में अध्ययन किया जाता रहा; परन्तु दूसरी विचारधारा फ्रांस के वाइडल डी ला ब्लाश (Vidal de la Blache) द्वारा प्रदिपादित की गई। इस विचारधारा के अनुसार एक नई बात सामने आई कि मनुष्य प्रकृति द्वारा प्रदत्त वातावरण से अपने विवेक के आधार पर अपना रास्ता चुन लेता है। इस तरह मनुष्य का स्थान भूगोल में निरन्तर बढ़ता गया।

ब्लाश के समर्थक ब्रून्श महोदय ने मानवी कार्यकलापों को ओर भी महत्व दिया। उसके अनुसार यह मनुष्य ही है जो प्रकृति में आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर सकता है। वह प्रकृति का निरा दास ही नहीं, वरन् स्वामी भी है। इस प्रकार भूगोल की इस विचारधारा को सम्भववाद (Possiblism) कहा गया। उदाहरण के तौर पर मानव आज आकर्टिक वृत्त एवं टुण्ड्रा में गेहूँ की खेती करता है, उत्तरी ध्रुव सागरों में जलयान चला सकता हैं। दुनियाँ की दूरी बहुत कम रह गई है। चन्द्रमा और सूर्य भी अब मानव के बहुत निकट आ गये हैं। यह सभी मानव की हर एक असंभव बात को संभव बनाने के प्रयत्न हैं। इस तरह ब्रून्श ने मानव के प्रभाव को भूगोल में समुचित स्थान दिया।

---

1 *"Geography is the science of interaction between man and his environment."*

परन्तु ब्रून्श को भी अतिवादी कहा जा सकता है। वास्तव में न तो प्रकृति के वातावरण के प्रभाव को ही सर्वाधिक महत्व दिया जा सकता है और न ही मनुष्य को। वस्तुतः "भूगोल मनुष्य और प्रकृति के मध्य होने वाली क्रिया तथा प्रतिक्रिया है।"[1]

पुनः भूगोल में एक और तत्व का समावेश हुआ। वह था कि भूगोल में केवल मनुष्य का ही अध्ययन नहीं होना चाहिए वरन् अन्य जीवों (पशु, पेड़, पौधे) एवं उनके पारस्परिक सम्बन्धों का भी अध्ययन आवश्यक है। अतः इस लक्ष्य के आधार पर भूगोल की जेम्स फेयरग्रीव द्वारा प्रतिपादित परिभाषा सामने आई।

"भूगोल प्राकृतिक निर्जीव तत्वों तथा सजीव तत्वों के सिद्धान्त और क्रियाओं के पारस्परिक सम्बन्ध का विज्ञान है।"[1]

उक्त परिभाषा में दो शब्दों की व्याख्या की गई है-

(1) निर्जीव तत्त्व (Inorganic factors), तथा (2) सजीव तत्त्व (Organic factors)।

निर्जीव तत्त्व के अन्दर प्राकृतिक वातावरण के तत्त्व

धरातल; पानी, वर्षा, हवा, तापक्रम आदि आते हैं तथा सजीव तत्वों के अन्तर्गत मनुष्य, पशु, जीव, वनस्पति आदि आते हैं। इसी परिभाषा को अन्य रूप में भी कहा जाता है: "भूगोल सजीव तत्त्वों पर निर्जीव तत्त्वों के अधिकार को व्यक्त करता है।"

इस तरह भूगोल के अन्तर्गत प्राकृतिक वातावरण के तत्त्वों- धरातल, जल, वायु, वर्षा आदि का सजीव तत्त्वों- मनुष्य, पशु, पक्षी, वनस्पति आदि पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका वर्णन होता है। इस प्रकार न केवल मनुष्य वरन् अन्य जीव-जन्तु एवं वनस्पति भी प्राकृतिक वातावरण से प्रभावित होते हैं।

20वीं शताब्दी का भूगोल

इस प्रकार 20वीं सदी के प्रारम्भ तक भूगोल में मानव भूगोल का महत्व निरंतर बढ़ता गया और इसके साथ-साथ इसका क्षेत्र भी । फिञ्च और ट्रिवार्था ने भूगोल की परिभाषा इस प्रकार दी है:"भूगोल पृथ्वी के धरातल का विज्ञान है।[2] यह पृथ्वी पर विभिन्न वस्तुओं के वितरण, वितरण के कारणों तथा विभिन्न वस्तुओं के प्रादेशिक जमाव का वर्णन करता है।"

यह तो सत्य है कि भूगोल धरातल का और उसके विभिन्न प्रकार के वितरणों के प्रभाव का वर्णन करता है, परन्तु भूगोल में और भी बातों का अध्ययन किया जाता है। प्रोफेसर अनस्टेड (Unstead) के अनुसार, भूगोल वह विज्ञान है जो एक अणुजीव (Micro-organism) की दशाओं का पता लगाता है तथा इसके अन्य भागों[3] के बीच के

---

1 *"Geography is the science of relationship between physical inorganic factors and principles and activities of organic factors." - James Fair Grieve.*

2 *"Geography is the science of eath's surface. It conssists of systematic description, and interpreation of distribution pattern and the regional associations of things on the surface of the earth." - Finch and Trivartha.*

3 *"Geography is th science which investigates the conditions of the Macro-organism and the space relations of its component parts." - Unstead.*

सम्बन्ध को स्पष्ट करता है। अनस्टेड महोदय सम्पूर्ण संसार को एक ही यूनिट (Single organism) में मानते हैं। संसार एक बड़ा जीव है तथा एक है।

इसी बात को मैकिण्डर महोदय ने निम्न शब्दों में व्यक्त किया है- "भूगोल के अन्तर्गत, जल-मण्डल पर जो भी क्रियाएँ एवं प्रतिक्रियाएँ होती हैं, उनका वर्णन आता है।"[1] यहाँ वे सब मानवी क्रियाएँ- उद्योग, व्यवसाय, उत्पादन के लिए की गई क्रियाएँ आदि तथा पृथ्वी की आन्तरिक एवं बाह्य क्रियाएँ (आन्तरिक में भूकम्प, ज्वालामुखी आदि तथा बाह्य क्रियाओं में पानी, हवा, बर्फ, सूर्य, ताप आदि की क्रियाएँ आती हैं।

इस प्रकार सभी परिभाषाएँ कोई न कोई अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। इसी संदर्भ में जेम्स फेयरग्रीव ने जिन्होंने भूगोल-शिक्षण के क्षेत्र में काफी कार्य किया है एक और व्यापक दृष्टिकोण रखा है।

"भूगोल का कार्य भावी नागरिकों को इस प्रकार प्रशिक्षित करना है, जिसके आधार पर वे विशाल रंगमंच की दशाओं की ठीक-ठीक कल्पना कर सकें, ताकि वे निष्पक्ष रूप से अपने चारों ओर होने वाली विश्व की सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं पर विचार कर सकें।"[2]

फेयर ग्रीव महोदय की परिभाषा अधिक व्यापक है। इसमें दो बातों पर मुख्य रूप से जोर दिया गया है-

(1) ऐसे भविष्य के नागरिकों को तैयार करना जो राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं पर निष्पक्ष होकर निर्णय ले सकें, और

(2) विश्व रूपी रंगमंच की सही (वास्तविक) कल्पना कर सकें।

इनके मतानुसार दूसरे बिन्दु के अंतर्गत भूगोल में पृथ्वी रूपी रंगमंच का वर्णन आता है, जिसके अन्दर विश्व का धरातल, सम्पदाएँ तथा मानव क्रियाएँ आ जायेंगी। प्रथम उद्देश्य के अन्दर जो बहुत ही व्यापक है, ऐसे सुयोग्य नागरिक पैदा करने होंगे जो केवल अपने देश अथवा राज्य की अथवा निजी स्वार्थों की ही बात न सोचें वरन् एक उत्तरदायी दृष्टिकोण से समाज और राजनीतिक समस्याओं का हल सुझाएँ। उदाहरणार्थ, विश्व की बड़ी-बड़ी नदियाँ जो किसी एक देश विशेष से निकलें और वह देश अथवा देशवासी यह सोचने लग जायें कि हम ही सारे पानी का उपभोग कर लें, दूसरे देश को न दें, भले ही दूसरे देश को पानी न देने से लोग प्यासे मर जायँ, तो यह संकुचित दृष्टिकोण ही होगा। इस प्रकार सर्वप्रथम भूगोल में एक व्यापक दृष्टिकोण का समावेश हुआ जिससे विश्व-नागरिकता तथा विश्व-बन्धुत्व की बात का समावेश हुआ और राजनीति की चर्चा की गई। इस तरह भूगोल का विषय व्यापकता की ओर बढ़ने लगा।

प्रोफेसर डेवनहम, भूगोल के क्षेत्र के अन्तर्गत तीन बातों का उल्लेख करते हैं -

(1) विश्व में वितरण के कारण;

(2) भौगोलिक वातावरण और मानव सह-सम्बन्ध; तथा

---

1 *"Geography deals with the actions and reactions that take place within the hydrosphere." - Mackinder.*

2 *The function of Geography is to train future citizens to immagine accurately the conditions of the great world satge and so to help them to think sanely about political and social problems in the world around." - James Fraigrieve.*

(3) मानव और प्रकृति के परस्पर क्रिया-कलाप।

इस परिभाषा के अन्तर्गत विश्व में विभिन्न पदार्थों का वितरण और वितरण के कारण, भौगोलिक वातावरण का मानव के ऊपर प्रभाव तथा मानव किस तरह भौगोलिक वातावरण को नियंत्रित करता है एवं मानव और प्रकृति के पारस्परिक क्रिया-कलापों का उल्लेख किया गया है।

वर्तमान युग में एक अमेरिकी भूगोलवेत्ता श्री कार्ल ओ सौसर (Carl O Saucer) ने भूगोल में सांस्कृतिक पक्ष के अध्ययन पर भी बल दिया है। इसके अन्दर मानव-निवास, उनके प्रकार, आबादी, भूमि के उपयोग, जनसंख्या की समस्या, स्थानान्तरण आदि के अध्ययन को भी सम्मिलित किया हैं।

यूनेस्को द्वारा प्रकाशित 'सोर्स बुक फार ज्योग्राफी टीचिंग' (Source Book for Geography Teaching) में निम्न बातों का उल्लेख किया गया है-

1. भूगोल के अन्तर्गत पृथ्वी के दृश्य-घटना का अध्ययन एवं पृथ्वी की वर्तमान धरातलीय स्थिति का वर्णन आता है। साथ ही अदृश्य कारणों (मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक और धार्मिक) का भी वर्णन आता है, क्योंकि ये मनुष्य को प्रभावित करते हैं।
2. पृथ्वी की ये सम्पदाएँ कहाँ कितनी मात्रा में हैं, इसको मानचित्र पर अंकित करना।
3. प्राकृतिक कारणों तथा मानवीय सम्बन्धों का विवेचन करना।

इस तरह इस परिभाषा में (1) पृथ्वी के धरातलीय स्वरूप, (2) पृथ्वी की सम्पदाएँ (विवरण), (3) मानव का सांस्कृतिक पक्ष (मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक और धार्मिक), (4) प्रकृति एवं मनुष्य के सहसम्बन्ध और उपर्युक्त प्रभाव का, (5) मानचित्र पर अंकन का उल्लेख आता है।

अस्तु आज के भूगोल में निरन्तर कुछ न कुछ अध्ययन सामग्री बढ़ती ही जाती है। इसका एक कारण वर्तमान काल में बढ़ता हुआ वैज्ञानिक ज्ञान भी है।

अन्त में यदि भूगोल की प्रगति ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो भूगोल के विकास में स्पष्ट रूप से तीन काल दिखाई देते हैं। -

प्रथम युग- खाड़ी और अन्तरीप का भूगोल अथवा जिसे वर्णानात्मक भूगोल कहा जा सकता है। इस काल में भूगोल में सिर्फ छात्रों को भूगोल के तथ्यों और भूगोल सामग्री को रटाया जाता था जिसमें धरातल के रूप- पर्वत, पठार, मैदान, नदियों, शहरों आदि की सूची हुआ करती थी। इसमें स्मरण-शक्ति पर अधिक जोर दिया जाता था।

पूर्व मध्य युग- दूसरे काल में विज्ञान के विकास के परिणामस्वरूप भूगोल में बजाय स्मरण-शक्ति के; विषय के वैज्ञानिक अध्ययन पर जोर दिया गया। भूगोल का ज्ञान तर्क व कार्य-कारण के आधार पर दिया जाने लगा और भूगोल में क्रमबद्ध रूप से पृथ्वी का वर्णन किया जाने लगा।

उत्तर मध्य युग- इस युग में मानव के महत्त्व को भूगोल में स्वीकार किया गया और भूगोल में पृथ्वी को मानव के घर के रूप में अध्ययन किया गया।

वर्तमान भूगोल- मध्य युग के दोनों युगों में (पूर्व मध्य युग एवं उत्तर मध्य युग) दो दिशाएँ रही हैं- (i) वैज्ञानिक तथा (ii) मानवी। वस्तुतः भूगोल न केवल विज्ञान है, और

न केवल कला, यह तो दोनों का समन्वित अध्ययन है। हम इसे अलग-अलग नहीं कर सकते। आज के युग के प्रमुख भूगोलवेत्ता टेलर[1] (Tylor) ने भूगोल के अन्दर कला और विज्ञान दोनों के विषयों को सम्मिलित किया है। टेलर ने आज के भूगोल में निम्न बातों के अध्ययन पर जोर दिया है-

विज्ञान के विषयों के आधार पर बनी भूगोल की शाखाएँ :

1. जीवशास्त्र (Biology) के आधार पर - वनस्पति शास्त्र (Ecology of Plants)।
2. भूगर्भ-शास्त्र (Geology) के आधार पर- भू-रचना सम्बन्धी शास्त्र (topography)।
3. खगोलशास्त्र (Astronomy) के आधार पर- मानचित्र-विज्ञान (Cartography)।
4. भौतिक विज्ञान (Physics) के आधार पर - जलवायु-विज्ञान (Climatology)।

कला के विषयों के आधार पर :

1. इतिहास (History) से राजनीतिक भूगोल (Political Geography)।
2. समाजशास्त्र (Sociology) से सामाजिक भूगोल (Sociogeography)।
3. मानव शरीर-रचना शास्त्र (Anthropology) से मानव भूगोल (Human Geography)।
4. अर्थशास्त्र (Economics) से आर्थिक भूगोल (Economic Geography)।

इस तरह भूगोल विषय का स्वरूप निरन्तर परिवर्तन और परिवर्द्धन की ओर है। आने वाले वर्षों में इसके स्वरूप में और भी परिवर्तन होंगे।

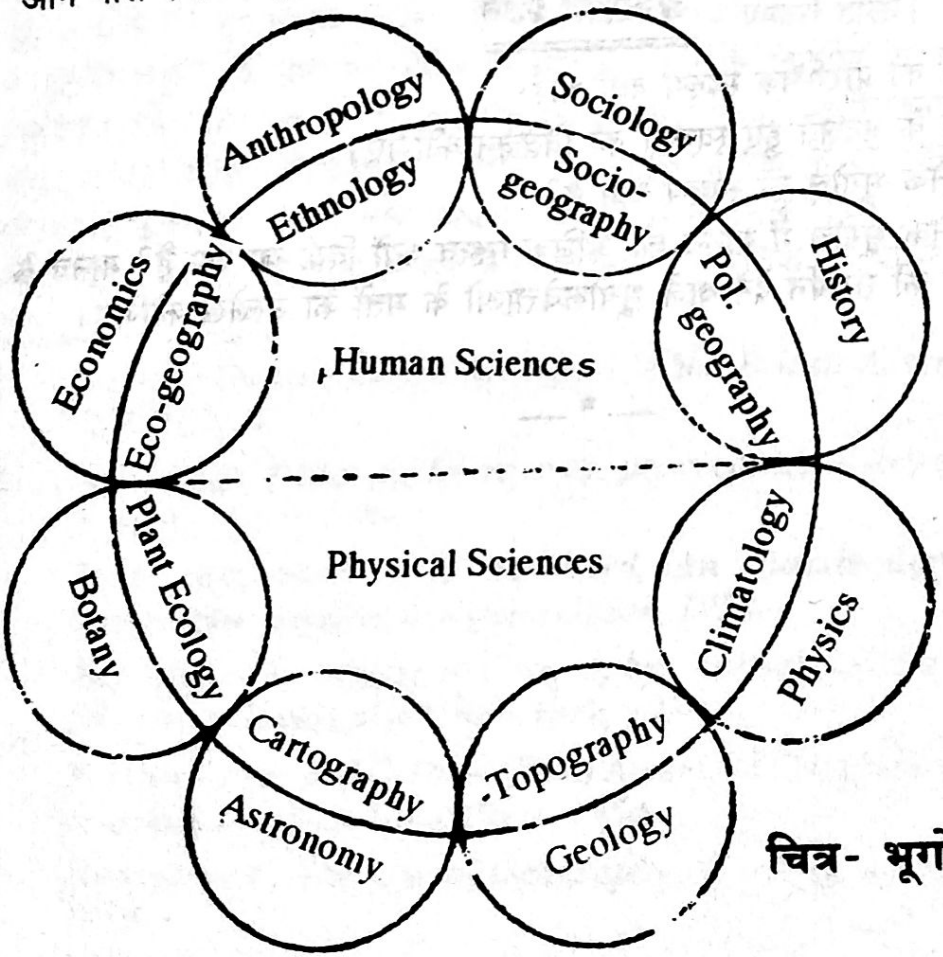

चित्र- भूगोल की शाखाएँ

---

1 *Tylor : Geography in the Twentieth Century, London : Methue philosophical Library.*

आज भूगोल रूपी वट-वृक्ष की अनेक शाखाएँ हो गयी हैं। इनमें से प्रमुख निम्न हैं-

1. प्राकृतिक भूगोल (Physical Geography)
2. मानव भूगोल (Human Geography)
3. आर्थिक भूगोल (Economic Geography)
4. ऐतिहासिक भूगोल (Historical Geography)
5. राजनीतिक भूगोल (Political Geography)
6. प्रादेशिक भूगोल (Regional Geography)
7. मानचित्र-विज्ञान (Cartography)
8. वनस्पति भूगोल (Ecology of Plant Geography)
9. सामाजिक भूगोल (Socio-Geography)
10. भूमि-उपयोग भूगोल (Land Use Geography)
11. शहरी भूगोल (Urban Geography)
12. बाजारी भूगोल (Marketing Geography)
13. चिकित्सा भूगोल (Medical Geography)

ऐसी आशा है कि भविष्य में इस भूगोल रूपी वट-वृक्ष में ज्ञान की और अनेक शाखाएँ प्रस्फुटित होती जायेंगी।